

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

मानस्य हृदयं श्रुकसमभ्यवेति षट्. Br. 3, 8, 5, 8. — 2) ein Uebereinkommen schliessen, mit dem instr.: येनो ह् समभ्यवेयान्नास्मै हुक्षेत् षट्. Br. 3, 4, 2, 9.

— उपाव 1) hinabsteigen (in's Bad): श्रुवभ्यमेव तदुपावैति AV. 11, 6, 53. — 2) einstimmen, einfallen (in gemeinsamen Ruf): स्वर्धोतिरिति त्रिनिधनमुपावयति षट्. Br. 4, 6, 9, 12. 12, 8, 2, 26. — 3) zustimmen, sich willig zeigen: तदेवा भीषा नोपावेयुः षट्. Br. 3, 8, 2, 28. 7, 2, 3.

— पर्यव 1) umlenken, einlenken: श्रयथेन चरिवा पन्थानं पर्यवेयात् अि. Br. 4, 4. — 2) umlaufen (von der Zeit), verstreichen: संवत्सरे पर्यवेते षट्. Br. 13, 4, 2, 1. 12, 3, 2, 1. तेषां यदा तत्पर्यवेति 14, 9, 1, 19 (= Bṛh. Ār. Up. 6, 2, 16). पर्यवेतन्नत का. 44.

— प्रत्यव (herabgehend) erreichen: हृदयस्याकाशं प्रत्यवेत्य षट्. Br. 10, 5, 2, 11. कार्यं न्विमो लोकान्प्रत्यवेयामिति 11, 2, 2, 3.

— अभिप्रत्यव herabsteigen zu षट्. Br. 5, 5, 2, 4.

— व्यव dazwischentreten, trennen: नेदेकवचनेन बहुवचनं व्यवयाम षट्. Br. 13, 5, 1, 18. गार्क्यपत्याकृवनीचौ न व्यवेयात् कित्. च. 1, 8, 23. नात्तरा यज्ञाङ्गानि व्यवेयात् का. 1. Nib. 6, 11. gramm. durch Einschlebung auflösen: तैषवर्णाश्च संयोगान्वयवेयात्सदृशैः स्वैः RV. Prāt. 17, 13. व्यवेत getrennt, geschieden: पदव्यवेत 11, 8. 3, 21. उपसर्गव्यवेत P. 8, 1, 38.

— अनुव्यव einem Andern folgend dazwischentreten षट्. Br. 3, 4, 2, 1, 3.

— समव zusammenkommen, — fließen, sich vereinigen in (mit dem acc.): यावडुदकं समवायात् षट्. Br. 1, 8, 1, 6. 11, 1, 6, 30. एते क्व वै रात्री सर्वा रात्रयः समवयति 2, 4. समवायान्मवैति P. 4, 4, 43. — partic. समवेत zusammengekommen, vereint; in einer grössern Anzahl vorhanden; alle insgesamt (im du. oder pl.) M. 2, 139. Bhāg. 1, 1. MBh. 1, 6987. 2, 2054. 4, 797. R. 4, 28, 12. सेनायो समवेता ये सैन्यास्ते AK. 2, 8, 2, 29. H. 763. एष्टव्या बहवः पुत्रा गुणावतो बहुश्रुताः । तेषां वै समवेतानो यदि कश्चिद्गयो व्रजेत् ॥ R. 2, 107, 13. त्रिविधाः पुरुषा लोके उत्तमाधममध्यमाः । तेषां तु समवेतानो गुणोपाधान्दाम्यकम् ॥ 5, 77, 7. 37, 33. mit Etwas vereinigt, in Etwas enthalten; am Ende eines comp. S. H. D. 13, 4.

— अस्तम् untergehen (auch in übertr. Bed.): अस्तमयते Prāb. 112, 6. Vgl. 2. अस्त 2, wo eine Anzahl Beispiele zu finden sind.

— अयस्तम् für Jmd untergehen, d. h. neben, während der Thätigkeit u. s. w. einer Person: नान्यत्र दीक्षितविमितादादित्यो ऽभ्युदियाद्वाभ्यस्तमियात् अि. Br. 1, 3. नैनमन्यत्र चरत्तमभ्यस्तमियात् षट्. Br. 3, 2, 2, 17. 9, 2, 8. 12, 4, 2, 6. Vgl. अयस्तम्, wo die Bedeutung nicht scharf genug angegeben worden ist.

— आ 1) herbeikommen, kommen (mit पुनरु zurückkommen); kommen zu (acc.): परां च यस्ति पुनरां च यस्ति RV. 4, 123, 12. आयतीनां प्रथमा 124, 2. आयम्य सुकृतं प्रातरिच्छन् 125, 3. 191, 2. आते पितमरुतां सुसमेतु 3, 33, 1. 53, 8. 87, 8. 8, 84, 7. आते एतु मनः पुनः 10, 37, 4. 83, 19. 101, 3. 106, 2. AV. 2, 26, 1. 6, 131, 3. अयैकिं यतं एयथ 10, 1, 28. 18, 4, 49. षट्. Br. 2, 2, 2, 12. 9, 1, 2, 12. यस्य राजानमच्छेत्वा नाकृत्त एयुः 12, 6, 2, 5. यदिदानो ह्यै विवदमानावेयाताम् 1, 3, 2, 27 (= Bṛh. Ār. Up. 5, 14, 4). 4, 1, 2, 4, 14. यज्ञमातमेयाय Kāhā. Up. 1, 10, 7. पञ्चालानां समितिमेयाय 5, 3, 1. राज्ञो ऽर्धमेयाय 6. mit dem dat.: तस्मात्सोकात्पुनरैत्यस्मै लोकाय Bṛh. Ār. Up. 4, 4, 6. तयोर्धमायन् (partic.) Kāhā. Up. 8, 6, 6 = का. 16, 16.

एत partic. RV. 3, 39, 3. Nir. 3, 16. एकि MBh. 2, 2186. N. 7, 4. 23, 18. R. 1, 9, 54. वि. 2, 21. Hit. II, 22. च. 50, 16. एकि मन्ये (in der Ironie) P. 8, 1, 46.

एत्य M. 4, 225. R. 1, 73, 9. Gitag. 5, 1. Kathās. 13, 166. 20, 29. Vid. 137. 160. स्यविर आयति (partic.) M. 2, 120. 8, 235. आयती f. Ragh. 11, 17. तपोवनादित्य 3, 18. विद्या ब्राह्मणमित्याह M. 2, 114. दूरस्थस्यैत्य चात्तिकम् M. 2, 197. एत्य कर्मस्थलानि Megh. 67. निलयमायद्भिः — मृगद्विजैः R. 2, 46, 3. रामस्य — आश्रममेयुषः 100, 6. — 2) Jmd (acc.) zu Theil werden: श्रेयश्च प्रेषश्च मनुष्यमेतः का. 16, 2, 2. तस्मात्त्वा पृथग्वलय आययति (!) Kāhā. Up. 5, 14, 1. — 3) gelangen zu, gehen in, sich hingeben, gerathen in, erlangen: निद्राया वशमेयिवान् R. 2, 62, 20. संयोगमित्य Megh. 12. निद्रामित्य Prāb. 16, 17. नर्देवस्य — दिष्टात्तमेयुषः (! vgl. उपेयुषः R. 2, 21, 7. 54, 23). R. 2, 65, 28. सर्वसमतमेत्य M. 12, 125. — Vgl. आय, आयन, आयिन्.

— intens. 1) herbeieilen: आ विस्पतीव वीरिरे इयाते RV. 7, 39, 2. — 2) erflehen: आ वै देवास इमेह वामम् VS. 4, 5. — अच्का hinzugehen: स्वमेतदृच्छायति AV. 12, 4, 15, 14. — अत्या herüberkommen AV. 11, 10, 14, 15. — अन्वा in Jmdes Gefolge kommen; nachfolgen: सोमं राजानं क्रीतमन्वायति अि. Br. 1, 15. Kāhā. Up. 11, 1, 8. तानं धातरनु वः कृत्येमसि RV. 1, 161, 3. मम चित्तमनु चित्तेगिरितं AV. 3, 8, 6.

— अन्वा 1) herbeikommen, kommen zu oder in, treten zu: अन्वायति राधस्ते Vālakh. 6, 1. अन्वा या सेनां मरुतः परेषामभ्येति नः VS. 17, 47. वं याचमानो अन्वायिं AV. 6, 118, 3. जीवतां ज्योतिरुन्वावाडा वा हरामि 8, 2, 2. पुरुषमेवाभ्येयाय षट्. Br. 2, 3, 2, 1. 4, 25. 4, 3, 4, 14. fgg. 3, 2, 1, 22. पितृलोकाञ्जीवलोकमभ्यायति 13, 8, 4, 6. अन्वेत्य N. 18, 13. 22, 2. वि. 13, 6. R. 5, 36, 40. गङ्गामभ्येकि सततं प्राप्स्यसे सिद्धिमुत्तमाम् MBh. 13, 1862. तमभ्येत्य Kathās. 22, 50. मम गृहमभ्येत्य Pañkā. 252, 18. — 2) sich hingeben (dem Schlaf): निद्रामभ्येकि R. 1, 35, 14.

— समभ्या herbeikommen, zu Jmd kommen: समभ्येत्य Pañkā. 40, 21. 158, 16. mit dem acc. der Person 46, 18. 96, 15. MBh. 14, 2614.

— उदा heraufkommen; emporkommen aus; herauskommen: उडु त्यञ्जतुर्नकि मित्रयोरां एति प्रियं वरुणायोर्दधम् RV. 6, 51, 1. उदेकिं मृत्योर्गम्भीरात् AV. 5, 30, 11. उदेकिं वोदेम् 11, 1, 21. 6, 18. 12, 4, 41. उदेकिं वाजिन्यो अस्त्वयत्तः 13, 1, 1. 17, 1, 22. vom Hinaufschreiten zum Altar षट्. Br. 1, 2, 5, 21. 2, 3, 2, 45. 3, 11. zum Audienzsaal eines Königs: सकृ प्रातः सभाग उदेयाय Kāhā. Up. 5, 3, 6. aus dem Bade u. s. w. steigen षट्. Br. 4, 1, 5, 12. 4, 5, 23. 5, 2, 12, 1, 11. hinausgehen: यज्ञायतो हूरमुदेति उदेति? देवम् (मनः) VS. 34, 1.

— अनूदा nach Jmd emporsteigen u. s. w. षट्. Br. 3, 5, 2, 3. 9, 2, 2, 1. य एवायं यतं पश्चाच्छेदो ऽनूदेति 14, 5, 2, 11 (= Bṛh. Ār. Up. 2, 1, 10, wo अनूदेति). Kāhā. Up. 5, 4, 7. 18, 3, 17.

— अयुदा herankommen (an das Haus) AV. 15, 11, 2. 12, 2. — उपोदा hinaufgehen: गृहानुपौदेति AV. 11, 6, 53. षट्. Br. 2, 3, 2, 16. — उपा 1) herbeikommen, kommen zu (acc.), treten zu, sich nähern; aufsuchen: यो मो सुवृत्तमुप गोभिरायत् RV. 2, 30, 7. उपं धातुवमार्यति 8, 20, 22. 46, 30. 83, 8. धेनुव्रीगस्मानुप सुष्टुतेत् 89, 11. इन्द्रं देवानामुप सव्यमायन् 9, 97, 5. 10, 88, 19. 1, 1, 7. मम चित्तमययति AV. 4, 33, 2. 3, 10, 2. 6, 118, 3. 7, 66, 1. 18, 2, 21. 60. षट्. Br. 6, 2, 2, 2. fgg. 9, 2, 2, 20. उपैकि Gitag. 11, 3. तामुपैकि — शराम् Dev. 13, 3. sich geschlechtlich nähern: गा-

— अनूदा nach Jmd emporsteigen u. s. w. षट्. Br. 3, 5, 2, 3. 9, 2, 2, 1. य एवायं यतं पश्चाच्छेदो ऽनूदेति 14, 5, 2, 11 (= Bṛh. Ār. Up. 2, 1, 10, wo अनूदेति). Kāhā. Up. 5, 4, 7. 18, 3, 17.

— अयुदा herankommen (an das Haus) AV. 15, 11, 2. 12, 2.

— उपोदा hinaufgehen: गृहानुपौदेति AV. 11, 6, 53. षट्. Br. 2, 3, 2, 16.

— उपा 1) herbeikommen, kommen zu (acc.), treten zu, sich nähern; aufsuchen: यो मो सुवृत्तमुप गोभिरायत् RV. 2, 30, 7. उपं धातुवमार्यति 8, 20, 22. 46, 30. 83, 8. धेनुव्रीगस्मानुप सुष्टुतेत् 89, 11. इन्द्रं देवानामुप सव्यमायन् 9, 97, 5. 10, 88, 19. 1, 1, 7. मम चित्तमययति AV. 4, 33, 2. 3, 10, 2. 6, 118, 3. 7, 66, 1. 18, 2, 21. 60. षट्. Br. 6, 2, 2, 2. fgg. 9, 2, 2, 20. उपैकि Gitag. 11, 3. तामुपैकि — शराम् Dev. 13, 3. sich geschlechtlich nähern: गा-